E Content for the Student of Patliputra University

Subject - Political Science

Class B.A.(Hons) Part-II Paper IV

Topic - Indo-China Relation

Dr. Umesh Chandra Shukla
Associate Prof. Pol. Sc.
R.R.S. College, Mokama

भारत और चीन एशिया के दो पुरानी सभ्यताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। वर्तमान समय में भी दोनों एक साथ राजनीतिक परिवर्तन की नई व्यवस्था को स्वीकार किया। 1947 में भारत को साम्राज्यवाद के चंगुल से मुक्त होने का अवसर मिला तो 1949 में चीन को शोषण पर आधारित राजतंत्र से मुक्ति मिली। भारत ने प्रजातंत्र को स्वीकार किया तो चीन ने साम्यवाद को।

दोनों देशों ने अपने संबंधों का प्रारम्भ पारस्परिक मित्रता के माहौल में किया। भारतीय प्रधानमंत्री नेहरू चीन के प्रति अपनी उदारता का परिचय अति उत्साह एवं विश्वास के साथ कर रहे थे। हिन्दी-चीनी भाई-भाई के नारे तथा "पंचशील" का समझौता उनकी बहुत बड़ी उपलब्धि समझी गई। किन्तु चीन एक धोखेबाज मित्र का उदाहरण पेश करते हुए 1962 में भारत पर आक्रमण कर दिया। अति विश्वास के कारण नेहरू चीन से कोई आक्रमण की संभावना नहीं देख रहे थे, इसलिए कोई तैयारी नहीं थी। परिणामस्वरूप भारत को शर्मनाक हार का सामना करना पड़ा। भारत के बहुत बड़े भू-खंड पर चीन ने कब्जा कर लिया।

इसके बाद भारत और चीन के संबंध पारस्परिक अविश्वास के रहे। लम्बे समय तक भारत-चीन के संबंध औपचारिकता मात्र रही। इस बीच 1967 तथा 1975 में भारतीय सेना की चीनी सेना से टक्कर भी हुई। 1979 में तत्कालीन भारतीय विदेश मंत्री का

वाजपेई ने चीन की यात्रा की ~~[illegible]~~ उनकी वहाँ उपस्थिति में ही चीन ने वियतनाम पर आक्रमण कर दिया। वाजपेई ने अशिष्टता का व्यवहार बतलाते हुए बीच में ही यात्रा रद्द कर दी।

1988 में राजीव गाँधी के प्रधान मंत्री काल में चीन की सत्ता डेंग के हाथों में आई। उन्होंने उदारवादी नीति अपनाई। 1988 में भारत तथा चीन का जी०डी०पी० बराबर था। दोनों एक दूसरे से सबंध सुधारने को आगे बढ़े। सहमति बनी कि सीमा विवाद को हल करने के लिए कार्य दल का गठन कर काम बढ़ाया जाय साथ ही आर्थिक एवं व्यापारिक मुद्दों पर सहयोगात्मक रुख रखा जाय।

पुनः 2020 में चीन की नीति पुरानी ढर्रे पर आ गई है। प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी सदाशयता और विश्वास के साथ कदम पर कदम उठा रहे हैं। इसके विपरीत चीन के सर्वोच्च शासक शी जिनपिंग पुनः भारत को धोखा में रखते हुए भारतीय सीमा में अतिक्रमण की नीति पर चल रहे हैं। 2019 में डोकलाम में चीन ने अतिक्रमण किया। हल्की सैनिक झड़प होती रही। कुछ दिनों के बाद चीन ने अपनी फौज पीछे की।

पुनः जून 2020 में लदाख के कई क्षेत्रों में अतिक्रमण करने का प्रयास चीन करने लगा। गलवान की घाटी में दोनों देशों के सैनिक झड़प में 20 भारतीय सैनिक मारे गये। चीन के सैनिकों के मारे जाने का समाचार है, किन्तु वह उसका खुलासा नहीं करता है। बहुत दिनों के बाद राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल के हस्तक्षेप के बाद चीन की फौज पीछे होने पर तैयार हुई। किन्तु इससे समस्या समाधान नजर नहीं आता। चीन अब भी पैंगौंग क्षेत्र में PP-14, PP-15 पर जिसे फिंगर प्वांइट भी कहा जाता है, से फौज पीछे करने पर सहमत नहीं है। इसके अतिरिक्त वह भारतीय सीमा से

रहे क्षेत्रों में सड़क और पुलों का निर्माण कर रहे हैं। सैनिकों का भारी जमावड़ा बढ़ता जा रहे हैं।

चीन भारतीय हितों को प्रभावित करने के लिए भारत के पड़ोसी राज्यों में व्यापक निवेश कर सैनिक अड्डे का निर्माण करता है। भारत के विरोध में उन राष्ट्रों का उपयोग करता है। अब तक केवल पाकिस्तान चीन के समर्थन से भारत विरोधी नीति रखता था अब लंका, मालद्वीप में भी उसका निवेश काफी हो चुका है। वर्तमान समय में नेपाल की के० पी० शर्मा ओली की सरकार भारत विरोधी नीति अपनाने में सफलता के रूप में सबसे आगे हो चुका है। बंगलादेश में भी चीन निवेश कर चुका है। उनके प्रधान मंत्री का पाकिस्तान के प्रधानमंत्री से वार्ता तथा पिछले चार महीने से भारतीय राजदूत को मिलने का समय शेख हसीना द्वारा नहीं दिया जाना संदेह तथा आशंका को बढ़ाता है। ईरान के चाबहार बंदरगाह में भारत काफी खर्च कर चुका है, किन्तु चीन के दबाव में ईरान अब भारत को नजर अंदाज करने लगा है। चीन भूटान पर दबाव बनाने के लिए उसकी सीमा पर सड़क का निर्माण कर रहा है।

भारत अमेरिका तथा पश्चिमी राष्ट्रों, जापान, आस्ट्रेलिया का सहयोग प्राप्त कर रहा है। किन्तु नीतिगत आधार पर भारतीय विदेशमंत्री जयशंकर ने स्पष्ट कर दिया है कि सहयोग का आधार किसी गुट में शामिल होना नहीं होगा। भारत की स्वतंत्र गुटनिरपेक्ष नीति अब भी बनी रहेगी। भारत सामरिक अस्त्र शस्त्रों की खरीद पर भारी खर्च कर रहा है। अमेरिका, रूस, फ्रांस इजरायल आदि देशों से सामरिक साज-सामान खरीदे जा रहे हैं।

भारत अमेरिका आस्ट्रेलिया, जापान आदि देशों

को दक्षिण चीन सागर में चीन को घेरने की है। इसे चीन से मुक्त तथा स्वतंत्र क्षेत्र बनाना है। इसमें वियतनाम ताइवान, दक्षिण कोरिया, फिलिपींस आदि चीन के विरोध में खड़े होंगे। चीन के विरुद्ध खड़े होने का एक मुद्दा हांग कांग भी है।

कोरोना बिमारी भी चीन विरोधी देशों को सक्रिय हो जाने का एक कारण है। लोगों का मानना है कि कोरोना वुहान की प्रयोगशाला निर्मित वायरस है, जिससे संपूर्ण विश्व प्रभावित है। चीन ने समय पर W.H.O. को जानकारी न देकर विश्व के साथ जघन्य अपराध किया है। अमेरिका ने W.H.O. पर भी चीन की मदद का आरोप लगा कर W.H.O. को दिये जाने वाले अमेरिकी सहायता राशि बंद कर दिया है।

वर्तमान स्थिति यह है कि चीन साम्राज्यवादी नीति की ओर बढ़ चला है। वह विश्व के बहुत सारे देशों को विभिन्न परियोजनाओं में पूँजी निवेश करता है। आर्थिक सहायता देने में भ्रष्टाचार बढ़ाने का भी सहारा लेता है। इस प्रकार एक बहुत बड़े आर्थिक साम्राज्य की ओर वह बढ़ चला है। सामरिक क्षेत्र में भी वह अमेरिका से प्रतियोगिता कर रहा है। वह चीन सागर पर अपना एकाधिकार स्थापित कर अरब - बंगाल के रास्तों पर कब्जा जमाना चाहता है।

विश्व व्यवस्था को अपने अनुसार नियंत्रित करने की उसकी योजना है। जिन देशों से उसकी सीमा मिलती है वह सीमा विवाद पैदा कर तनाव पैदा करता है। चीन की साम्यवादी व्यवस्था के कारण वस्तुतः वहाँ तानाशाही व्यवस्था है। विरोध करने वाले की मौत या जेल होती है। शी जिनपिंग तो अपने को जीवन पर्यन्त शासक बने रहने का प्रस्ताव पास करा चुके है। इससे देशों में प्रजातंत्र

रहे के कारण सरकार को कोई निर्णय लेने के पूर्व प्रजातांत्रिक प्रक्रिया का पालन करना होता है। इस प्रकार उनकी तानाशाही व्यवस्था का उपभोग कर विश्वशांति को भंग करना चाहता है, जिसकी परिणति तृतीय विश्वयुद्ध के रूप में हो सकती है।

भारत-चीन संबंध वर्तमान समय में बहुत ही असामान्य तनाव ग्रस्त स्थिति में पहुँच गया है। भारत अपनी ओर से संयम तथा शांति का प्रयास जारी रखे हुए है किंतु चीन अगर शांति भंग करने पर उतारू होगा तो भारत करारा जवाब देने की तैयारी कर चुका है। चीनी कम्पनियों के भारत में निवेश रोका जा रहा है, उनके ठीके वापस लिए जा रहे हैं। कई एप कंपनियों पर पाबंदी लगा दी गई है। इस प्रकार भारत भी चीन पर दबाव की रणनीति पर चल रहा है।

आशा है चीन युद्ध जैसी नीति को नहीं अपनायेगा क्योंकि ऐसा करना तृतीय विश्वयुद्ध का प्रारंभ होगा।